श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान विशारद

तृतीय वर्ष - हिंदी

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

2019-2020

ऐनरोलमेन्ट नंबर उत्तरपत्रिका

डिसेंबर 2019

शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

	प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में		प्रश्न-२ (जारी)
(१)	श्रीवीरप्रभु	(१)	जैन आगम / जैन प्रतिमा	(५)	बेले
(२)	केवली	(२)	जंबुचरित्र	(६)	दीर्घ
(३)	कीर्तिकरण	(३)	किमादार	(७)	लवर
(४)	अनेकों	(४)	शिवादेवी	(८)	लक्ष्मी
(५)	आगालि	(५)	स्वालसो	(९)	भजना
(६)	चक्केश्वरी देवी	(६)	संज्ञा	(१०)	रोसा
(७)	विघ्नोसर्पा	(७)	उत्तराध्ययन सूत्र	(११)	हो
(८)	चकलोरव	(८)	श्री अदबुदजी	(१२)	कल्याण
(९)	विकलेंद्रिय	(९)	श्री शांतिनाथ भ.	(१३)	दिशा
(१०)	स्नानक्रिया	(१०)	भजना	(१४)	पुण्यशालीओं
(११)	गच्छाचारपयन्ना	(११)	बांये	(१५)	रहित
(१२)	परमात्मा	(१२)	शुक्लध्यान	(१६)	पंडित
(१३)	शुक्लध्यान	(१३)	युगादिदेव	(१७)	बनों
(१४)	करोड रज्जू	(१४)	श्री दृष्टिवाद सूत्र	(१८)	कहते हैं
(१५)	मद्यपली	(१५)	ग्यारहवा	(१९)	और
(१६)	यशाचन्द्र			(२०)	विकलेन्द्रिय
(१७)	एक पल्योपम				
(१८)	लब्धिवाली				
(१९)	नपुंसक वेद				
(२०)	परमात्म				

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	सचमुच
(२)	तिर्यंच
(३)	क्षपक श्रेणीपर
(४)	खेल

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	7	(६)	9
(२)	6	(७)	4
(३)	10	(८)	5
(४)	8	(९)	3
(५)	2	(१०)	1

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	6
(२)	85
(३)	1181
(४)	4
(५)	1229
(६)	363
(७)	102
(८)	20
(९)	6
(१०)	1244

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	20
(२)	×	(२)	4
(३)	✓	(३)	17
(४)	✓	(४)	24
(५)	✓	(५)	12
(६)	×	(६)	6
(७)	×	(७)	8
(८)	✓	(८)	18
(९)	×	(९)	15
(१०)	✓	(१०)	11

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. कोटडाके यदुवंशी सोमचंद : जयसिंहसूरि अपने ५०० शिष्यसहित उमरकोटसे जसलमेर विहार कर रहे थे तब रास्तेमें राजस्थानके अंतर्गत कोटडाके यदुवंशी सोमचंद अपने ५००० सुभटोंकी मददसे आसपास लूटपाट करना सामनेसे मिला और उसने उन्हें उनके पास जो कुछ है वह सौंपनेका आदेश दिया। तब बिना आनाकानी किये जयसिंहसूरिने साधुओंके उपकरण धर दिये तब आश्चर्यचकित हुआ सोमचंद उनके प्रभावके बंधनमें जकड गया। उसका हृदय परिवर्तन होकर वि.सं. १२११ में जैनधर्म स्विकार कर लूटपाट न करनेका वचन देकर सूरिके उपदेशसे कोटडामें श्री पार्श्वनाथ तथा गोत्रदेवी वीसलमाताका मंदिर बंधाया। सवा मण सुवर्णकी श्री शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमा और उसके उपर हीरा माणेक जडित छैत्र कराया।

२. गति अगति द्वार : कौनसा जीव मरकर किस गतिमें जायेगा वह गति द्वार और कौनसे गतिमें से जीव कौनसी गतिमें आता है वह अगतिद्वार कहलाता है। पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच और मनुष्य निश्चयसे भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क, वैमानिक यह चार प्रकारके देवोंके गरमें जाते है। पर्याप्त गर्भज मनुष्य (युगलिक अथवा युगलिक), पर्याप्त तिर्यंच पंचेन्द्रिय (गर्भज एवं सूमूर्च्छिम) देव बन सकते है।

३. जिनागमका महत्व समझावो वे कितने लिखो : सर्व जीवोंको सत्य समझाकर जिनशासनका रसिक बनानेकी भावदयासे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जनकेबाद उदयकालमें साधनासे केवलज्ञान पाकर तारक तीर्थकी स्थापना, चतुर्विध संघकी रचना और प्राणीमात्रके कल्याणकेलिए देशनाका झरना बहाते है, ऐसे जिनवाणीका संग्रह वह 'जिनागम' जो ११ अंग, १२ उपांग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूल, १ नंदिसूत्र, १ अनुयोगद्वार ऐसे सब मिलकर पैतालिस आगम है। जिसमें जीव अजीव के रहस्य, विश्वकी रचनाका विस्तार, जन्म-मरणकी समझ, सुख दुःखका स्वरूप और कारणोंका विवेचन, संसारकी मायाजाल और उसमेंसे मुक्त होनेका उपाय एवं तत्वज्ञान से भरपूर विचारधारा है। सर्वथा शुद्ध, प्रतिपूर्ण तथा न्यायमार्गका अनुसरण करके आत्माको तीन शल्योंसे मुक्त कर मुक्तिमार्गकी आराधनामें सहायक इसलिए ये आगम निर्वाणरूपी नगरतक पहुंचनेके मार्गरूप कहलाते है।

४. अनिवृत्ति गुणस्थानपर खपायी कर्मप्रकृतियां समझावो : क्षपकश्रेणीके नौवे गुणस्थानकमें क्षपक श्रेणीवाला साधक, नरकगति वगैरे... सोलह प्रकृतियोंको प्रथम भागमें, आठ मध्य कषाय दुसरे भागमें, नपुंसकवेद तीसरे भागमें, स्त्रीवेद चौथे भागमें, हास्य... वगैरे छः प्रकृतीयोंको पांचवे भागमें, पुरुषवेद छट्ठे भागमें, संज्वलन क्रोध सातवें भागमें, संज्वलन मान आठवें भागमें, संज्वलन माया नवमें भागमें खपाता है। इसतरह नौवे गुणस्थानके नौ भाग है। इस गुणस्थानकमें २२ प्रकृतियां बंधमें, ६६ प्रकृतीयां उदयमें और १०३ प्रकृतीयां सत्तामें होती है।

५. स्नात्रक्रिया और शांतिकलश समझावो : पुण्यशाली जिनेश्वरकी स्नात्रक्रिया प्रसंगपर विविध प्रकारके नृत्य, रत्न और पुष्पोंकी वर्षा, अष्टमंगलादिका आलेखन तथा मांगलिक स्तोत्र गाते है। तीर्थंकरोंके वंश, गोत्र आदि के नाम तथा मंत्र बोलते है। इस स्नात्रक्रियामें केसर, चंदन, कपूर, अगरुका धूप, वास और अंजलीमें विविधरंगी पुष्प रखकर बांये हाथमें शांतिकलश ग्रहण कर खडा रहना चाहिये। श्वेत वस्त्र, चंदन और अलंकार पहनकर बाह्य-अभ्यंतर शुद्ध होकर, पुष्पहार कंठमें धारण करके शांतिकी उद्घोषणा कर शांतिकलशका पानी स्वयं तथा दुसरोंने उसे मस्तकपर लगाना चाहिए। यह शांतिपाठ जिनबिंबकी प्रतिष्ठा, रथयात्रा तथा स्नात्रके अंतमें बोली जाती है।